ऑफलाइन बनाम ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियाँ

डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा
प्राचार्य, श्री रामजीलाल स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, पंवालिया
सांगानेर - जयपुर

वर्तमान समय में शिक्षा की दो प्रकार की प्रणालियाँ प्रचलित है, जिसमें से ऑफलाइन प्रणाली को परम्परागत शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत रखते हैं, जिसमें कक्षा कार्यक्रम, कोचिंग, ट्यूशन, सेमिनार इत्यादि शामिल हैं, जबकि गैर परम्परागत शिक्षा प्रणाली में ऑनलाइन प्रणाली को शामिल किया जाता है। ऑनलाइन प्रणाली में इंटरनेट आधारित विभिन्न प्रकार की सेवायें समाहित हैं, जिसमें सोशल मीडिया साइट्स की सेवाओं का सबसे अधिक विकास हुआ है। उसका प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र पर भी पड़ा है। पहले शिक्षा का माध्यम परम्परागत था तथा उसमें केवल ऑफलाइन शिक्षण सामग्री ही शामिल थी, लेकिन सूचना एवं तकनीकी के विकास एवं प्रसार से अब इसमें ऑनलाइन पद्धतियों को भी शामिल कर लिया गया है। इसमें सबसे प्रमुख भूमिका इंटरनेट की रही है। शिक्षा के क्षेत्र में जब से उपयोग प्रारम्भ हुआ, ज्ञान एवं कौशल में अभूतपूर्व वृद्धि हुयी है।

आज छात्रों एवं अन्य सभी प्रकार के अधिगमकर्त्ताओं के सामने यह विकल्प है कि वे ऑफलाइन बनाम ऑनलाइन पद्धतियों में से किसी एक या दोनों का सम्मिलित रूप से लाभ उठा सकते हैं।

ऑफलाइन और ऑनलाइन पद्धतियों के लाभ

1. आजकल ऑनलाइन पद्धतियों को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है लेकिन ऑफलाइन पद्धतियों के महत्व को भी कम नहीं माना जा सकता है।
2. ऑनलाइन पद्धतियों के उपयोग से आप घर बैठे ज्ञान को सीख सकते हैं। इससे समय तथा धन दोनों की बचत होती है।
3. ऑफलाइन पद्धतियों के उपयोग से छात्र ज्यादा आसान तरीके से शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि इसमें वे अध्यापक एवं उसकी अध्यापन प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

4. ऑफलाइन पद्धतियों के उपयोग में तुलनात्मक रूप से कम धन लगता है, क्योंकि पुस्तकों या अन्य मुद्रित सामग्री को कम पैसों में प्राप्त किया जा सकता है।

वस्तुत: इन दोनों ही पद्धतियों के अपने गुण एवं विशेषतायें होती हैं, लेकिन विद्वानों का मानना है कि यदि दोनों पद्धतियों का सम्मिलित रूप से प्रयोग किया जाये, तो वह ज्यादा लाभदायक सिद्ध होगा।

स्त्रोत –

क) ऑफलाइन पद्धतियों के उपयोग के स्त्रोतों में हम निम्न साधनों को शामिल कर सकते हैं–

१. पुस्तकें एवं अन्य प्रकार की पाठ्य–सामग्रियाँ

२. सन्दर्भ ग्रन्थ एवं पत्र–पत्रिकाएं

३. इन्साइक्लोपीडिया

४. जर्नल्स इत्यादि ।

ख) ऑनलाइन पद्धतियों के उपयोग के स्त्रोतों में हम निम्न साधनों को शामिल कर सकते है–

१. इंटरनेट

२. ई–मेल

३. वाटसैप्स

४. एसएमएस

५. एप्स आदि।

ऑफलाइन बनाम ऑनलाइन पद्धतियों में अन्तर

1. ऑफलाइन और ऑनलाइन पद्धतियों के बीच सबसे मुख्य अंतर स्थान का है। ऑफलाइन शिक्षण या प्रशिक्षण में छात्रों की यह बाध्यता होती है, कि उन्हें शिक्षण संस्थान या प्रशिक्षण स्थल जाना पड़ता है। दूसरी तरफ ऑनलाइन शिक्षण या प्रशिक्षण में छात्र किसी स्थान या अपने घर से ही बैठ कर शिक्षा या प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं।

2. ऑनलाइन पद्धतियों के उपयोग में समय की बाध्यता नहीं होती। छात्र किसी भी समय अपनी सुविधानुसार उनकी सहायता से शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं, जबकि ऑफलाइन पद्धतियों का उपयोग करने के लिए निश्चित समय व प्रशिक्षण संस्था स्थल पर जाना पड़ता है।

३. ऑफलाइन और ऑनलाइन पद्धतियों में धन खर्च में भी अन्तर पाया जाता है।

4, छात्रों को विषयवस्तु को रुचिपूर्वक पढ़ने में दोनों ही पद्धतियों में महान् अन्तर पाया जाता है। अधिकतर छात्र ऑफलाइन पद्धति को अधिक उपयोगी मानते हैं, परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में दोनों ही पद्धतियाँ कारगर सिद्ध हो रही हैं।

ऑनलाइन शिक्षण हेतु विशेष कार्यक्रम –

१. स्वयं – आज के सूचना संचार के युग में हमारी शैक्षिक व्यवस्था को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने काफी प्रभावित किया है। लेकिन सूचना संचार आधारित सेवाएं और यंत्र तथा उपकरण मंहगे हैं। उपकरण की गुणवत्ता उचित हो तो एक ही सूचनाओं को कई स्तरों पर कई माध्यमों से प्राप्त किया जा सकता हैं। ऐसे में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों तथा संसाधनसम्पन्न और संसाधनविहीन विद्यार्थियों के बीच ज्ञानार्जन के बीच जो अंतर है, उसे दूर किया जा सकता है। इसे डिजिटल डिवाइड्स के नाम से जाना जाता है। अत: भारत की नवीन शिक्षा नीति 2020 के अनुसार डिजिटल डिवाइड्स की समस्या को दूर करने के लिए स्वदेशी आत्मनिर्भर भारत में विकसित आई.टी. मंच जिसे **स्वयं** कहा जाता है, का विकास किया गया।

स्वयं एक ऐसा पाठ्यक्रम है जिसमें वीडियो, व्याख्यान, अध्ययन सामग्री, परीक्षा–प्रश्नोत्तरी और शंका–समाधान आधारित विभिन्न प्रकार के विषयों पर ऑनलाइन विचार–विमर्श प्रदान किया जाता है।

स्वयं विद्यार्थियों के लिए एक नि:शुल्क कार्यक्रम है। इसमें विद्यालय शिक्षा, विद्यालय पश्चात् की शिक्षा, स्नातक शिक्षा, स्नातकोत्तर शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

२. स्वयंप्रभा – मानव संसाधन विकास मंत्रालय (वर्तमान में शिक्षामंत्रालय) भी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के साथ मिलकर 32 डिजिटल शैक्षिक टी.वी. चैनलों के माध्यम से **स्वयंप्रभा** कार्यक्रम चला रहा है।

इसके अन्तर्गत बच्चों को वीडियो के साथ – साथ विषय विशेषज्ञों द्वारा तीन इंटर्रेक्टिव लेक्चर भी दिए जाएंगे ।कार्यक्रम के बाद दिए जाने वाल टॉल फ्री नम्बर पर फोन करके अपना शंका समाधान कर सकेगें।

निश्चित ही कहा जा सकता है कि वर्तमान कोविड १९ के दौर में जहाँ सब कुछ अस्त व्यस्त हो गया है ऐसी कठिन परिस्थितियों में जहाँ ऑफलाइन शिक्षण प्रदान नहीं किया जा सकता वहीं ऑनलाइन शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में यह पद्धति एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाएगी। टेलीएजुकेशन तथा टेलीकम्यूनिकेशन आधारित शिक्षाव्यवस्था भारत के शिक्षाक्षेत्र में जहाँ एकरूपता लाएगी, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रीय असंतुलन, ग्रामीण और शहरी शिक्षा के बीच में अन्तर अर्थात् डिजिटल डिवाइड्स की समस्या भी दूर होगी।